MAHAMUL 03014/13/1/2012-TC
Volume 2 - Special Issue - 2 - Jan - 2014
Online : 2320-8341
ISSN : 2320-6446

RESEARCH FRONT

An International Multidisciplinary Research Journal

Special Issue - 2

"स्वावलंबी शिक्षा यही हमारा ब्रीद" - कर्मवीर

रयत शिक्षण संस्था का,

दहिवडी कॉलेज दहिवडी

त.माण.,जि.सातारा

हिंदी विभाग

एवं

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली तथा

सातारा जिला हिंदी अध्यापक मंडल, सातारा

के संयुक्त तत्त्वावधान

में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

* विषय *

"२१ वीं सदी के हिंदी कथा साहित्य में व्यंग्य"

दि. ६ (सोमवार) एवं ७ (मंगलवार) अक्तूबर, २०१४

प्रकाशक

प्राचार्य, डॉ.चंद्रकांत खिलारे

दहिवडी कॉलेज दहिवडी

संपादक

प्रा.डॉ.बाळासाहेब बलवंत

संयोजक, राष्ट्रीय संगोष्ठी

हिंदी विभागाध्यक्ष,दहिवडी कॉलेज दहिवडी

सह-संपादक

प्रा.सोमनाथ कोळी

सहयोगी प्राध्यापक

* आयोजक *

हिंदी विभाग, दहिवडी कॉलेज दहिवडी

Scanned with OKEN Scanner

21	21 वीं सदी के गजलों में व्यंग्य	प्रा. सुश्री. जयश्री पाटील	86 – 92
22	सुरजपाल चौहान के कविताओं में व्यंग्य	डॉ. सुभाष राठोड	93 – 96
23	21 वीं सदी के कविताओं में व्यंग्य	प्रा. सचिन जाधव	97 – 99
24	21 वीं सदी के कविताओं में व्यंग्य	डॉ. एस.के. खोत	100 – 102
25	चंद्रसेन विराट के 'चुटकी चुटकी चाँदणी' दोहा संग्रह में व्यंग्य	प्रा. झेड.बी. मुलाणी	103 – 106
26	21 वीं सदी के कविताओं में व्यंग्य	प्रा. मारूफ मुजावर	107 – 115
27	व्यंग्य कवी डॉ. जरी काझी के कविताआं में व्यंग्य	प्रा.डॉ. हाशमबेग मिर्झा	116 – 123
28	21 वीं सदी के कविताओं में व्यंग्य	प्रा. मोहसीन बागवान	124 – 134
29	21 वीं सदी के कहानी साहित्य में व्यंग्य	प्रा.डॉ. भारत खिलारे	135 – 140
30	21 वीं सदी के कहानी साहित्य में व्यंग्य	प्रा. दत्तात्रय साळवे	141 – 144
31	स्नेहा ठाकूर के 'प्रथम डेट' कहानी में व्यंग्य	प्रा. सुनिल गायकवाड	145 – 146
32	सूर्यबाला की कहानी में चित्रित व्यंग्य	सुश्री. लक्ष्मी मनशेट्टी	147 – 150
33	21 वीं सदी के कहानी में सांस्कृतिक व्यंग्य	प्रा.डॉ. राजेंद्र भोसले	151 – 152
34	सूदर्शन प्रियदर्शन की कहानी 'अखबारवाला' में चित्रित व्यंग्य	डॉ. संजय चिंदगे	153 – 156
35	हरिशंकर परसाई के लघुकथाओं में व्यंग्य	डॉ. सुमित्रा पोवार / डॉ. बाबासाहेब पोवार	157 – 160
36	21 वीं सदी के निबंधों में व्यंग्य	डॉ. विनायक कुरणे	161 – 163
37	राम अवतार यादव के कहानियों में व्यंग्य	गणेश खवळे	164 – 166
38	व्यंग्य रचनाकार डॉ. सूर्यबाला	डॉ. बालासाहेब बलवंत	167 – 168
39	व्यंग्यकार माधव सोनटक्के	डॉ. विनायक शिंदे / श्री. अनंत वडघणे	169 – 172
40	ज्ञान चतुर्वेदी के 'खामोश! नंगे हमाम में है' में व्यंग्य	डॉ. संजय जाधव	173 – 176
41	'नावक के तीर' में व्यंग्य	डॉ. नितीन धवडे	177 – 180
42	सूर्यबाला के 'देशसेवा के अखाडे में' चित्रित व्यंग्य	डॉ. दत्तात्रय अनारसे	181 – 184
43	किसान अत्महत्या नामक यात्रानुमा	प्रा. डॉ. बी.एम. माने	185 – 190

Scanned with OKEN Scanner

२१ वीं सदी के हिंदी कथा साहित्य में व्यंग्य (प्रथम दशक)
'२१वी सदी के हिंदी कविता में व्यंग्य'(कवि हुल्लड मुरादाबादी के पद्य संदर्भ में)

प्रा.बागवान एम.एम.(एम.ए.नेट,सेट.)
सहाय्यक प्राध्यपक,हिंदी विभाग,
दहिवडी कॉलेज दहिवडी ।
दुरभाष्य. क्र. ८८५५९२९४३८.

मनुष्य इस संसार का अश्रफुल मखलुक है । वह 'सामाजिक भी है । अन्य सजीवों की तुलना में उसका मस्तिष्क अत्यंत विकसित है । प्रकृति ने मनुष्य की हृदयगत प्रकृति को रचते समय सत,तम,रज अर्थात सात्विक, तामसी एवं राजसी आदि को लेकर ही रचा है । मनुष्य समाज में रहते हुए उपर्युक्त तत्वों का इस्तेमाल आनायास रूपसे करता है । सत,तम,रज उमड उमड कर आंते हैं जब उसे वातावरण प्राप्त हो जाता है । व्यक्तिभिन्नता के सिध्दांत के अनुसार हर किसी का मानसपटल अलग दायरे में पल कर विकसित होता है । लेकिन जो प्रकृतिगत तमस से जुड़ा होगा उसके लिए हम थोडी ढील तो दे सकेंगें ! पर जब कोई मनुष्य तसम को अपनाकर या वह शोहरत,कामयाबी, पदोन्नती,स्वार्थ, अवसरवाद छल.कपट के लिए उत्पन्न होकर संचालन करेंगा तो वह समाज के लिए विघातक बन जाता है । इसके पिछे उसके मन के भीतर अहंभाव अपना साम्राज्य कर बैठा होता है । अहं ही आज विश्व का संचालन करता रहा है, और करता रहेगा । दिखावटी,भौतिकता, अवसरवाद,और अपने लक्ष्य को साध्य करने के लिए अहं से एवं तसम से उत्पन्न घिनौनी साजीश को अंजाम दे रहा है । कभी.कभार यह अहंभाव समाज,राष्ट्र, मनुष्य जाती के लिए जहर भी बन जाता है । मान लीजिए कोई रियासती, कोई धर्मगुररू,कोई सामाजिक, कोई साहित्यकार भी, आदि का अहं एवं तसम जाग जाए तो समाज में विकृतियों के दर्शन तो होने हीं हैं ।

साहित्यशास्त्रीय सिध्दांतों में साहित्यद्वारा समाज को संबोधित करने की कई विधियां आयी यह कयों उत्पन्न हुआ? साहित्य क्यों उत्पन्न हुआ? साहित्यकार कौन था? उसका क्या उददेश था? समाज से उसे क्या लेना देना था? आदि सवालों के जवाब ढुंढे तो अपने लिए सबसे पहले इसके लिए नैतिकता,मनुष्यता,मानवतावाद,सत्यता आदि के रंग बिरंगे चष्मे पहनने होंगे। साहित्यकार के पास यह चष्मा होता है । समाज में रहते हुए अच्छे.बुरे की पहचान उसे अपने चष्मे से होती है । जहॉ कहीं एखाद बात उसके मन को झुँझला देती है, तो वह तिलमिला उठता है, और अपने कसकती वेदना के लिए विरेचन का मार्ग खोल स्वरूप साहित्य का निर्माण करता है । जिसमें समाज के रबड,बर्बर एवं विकृत अनीति परख,तथा अमानुषता,जैसे तत्वों का विरोध कर, उसका समाज से निष्कासन करने की अपेक्षा होती हैं । परिणामस्वरूप साहित्य को गढ़ते समय उस साहित्यकार की मनो वृत्तियों तथा प्रभाव डालनेवाली बातें ही विभिन्न साहित्यिक विधियों को जन्म देती है ।

समाज प्रति अपना उत्तर दायित्व जानता हुआ एक सामाजिक स्वरूप 'स'हित की भावना रखकर,साहित्य का निर्माण कर उसे विचारों कों परोसने के लिए विभिन्न हथियार एंव उपकरण भी उठाने

Scanned with OKEN Scanner

पड़तें है । यह उपकरण एवं विषय परिवेश आधारित ही होंगे । जहां कहीं अनीति का दर्शन होंगा तो कवि भी फटकार लगने से चाह कर भी नहीं चूक सकता ।

समाज में परिष्कार करना है तो,जैसे मान लीजिए के मनुष्य के शरीर में मानों विभिन्न व्याधियां जड़ गई एवं वह अस्वस्थ हो गया तो उसके लिए कोई आईस्क्रीम हित कर न होगा,उसके लिए कटू औषधी ही जरूरी है । तब जाकर मनुष्य एवं समाज विशेष की व्याधियों एवं विकृत स्वरूप बिमारियों का विरेचन हो जाता है । हजम होने कडवाहट तकलीफ तो देती है मात्र इलाज तो सौ प्रतिशत होंगा ही । साहित्यकार भी ऐसी औषधीयों का प्रयोग करता ही है जो हास्य व्यंग्य के स्वरूप में हम देख सकते है ।

व्यंग्य शब्द का मुल रूप में यदि अर्थ देखा जाए तो, वह निम्म प्रकार से देखा जा सकता हैं । 'वि+अंग अर्थात 'वि' का अर्थ होंगा विकृत या विरूप । स्पष्ट है कि विकृत या विरूप व्यंग के कारक तत्व हैं । इसका अवशेष स्वरूप हम काव्यशास्त्रीय सिध्दांत ध्वनि और वक्रोक्ति सिध्दांत आदि को देख सकते हैं । आनंदवर्धन ने ध्वनि सिध्दांत में ध्वनि अर्थात व्यंजना शब्द शक्ति को प्रधानता दी है, जो विलक्षण अर्थ का प्रस्कुटन करती हैं । यह तो बात स्पष्ट हो गयी कि,व्यंजना ही वह व्यंग की विधायक शब्द शक्ती है जो अभिधा, लक्षणा,के झीने पर्दों को चिरते हुए व्यंग्यार्थ का स्फोट करती है । जो अत्यंत चमत्कारिक एवं भयानक होते हैं पर यदि व्यंग्य को कथित करना हैं तो वक्रोक्ति का भी हथियार हाथ में उठाना पडेगा इसलिए कुंतक ने वक्रोक्ति की बात स्पष्ट की है, "वक्रोक्ति रेववैदग्ध्यभंगीभणितीरूच्यतें "।'वक्र उक्तीदवारा विलक्षण टेढ़ा कथन ही वक्रोक्ति है । स्पष्ट हैं की, वक्रोक्ति एवं व्यंजना शब्द शक्ति का मिलान व्यंग्य का कलेवर भी है और आत्मा भी । जो पढने पश्चात पाठक आहत होंगा या आनंदीत । पर एक बात है कि यदि व्यंग्य का उद्देश्य केवल फटकार लगाकर तमसधारी बातों को जंजीरों से बांधना है तो फिर व्यंग्य केवल एक अटपटे को सीधा करने का साधन भी है।

समाज विशेष की परिस्थितियॉ ही व्यंग्य को पैदा करती हैं । साहित्यकार माध्यम बनता है और, लक्ष्य सुधार। व्यंग्य लक्ष्यपूर्ती का एक महान साधन बन जाता है । आज समग्र समाज एवं भारत देश और विश्व भी अन्याय,अनाचार,अत्याचार,पाखंड,कालाबाजारी, छल,दोगपालन अवसरवाद, असामंजस्य तथा आर्थिक,सामाजिक, धार्मिक, एवं राजनैतिक विसंगतियों से घिरा है । परिणाम स्वरूप इस पर अंकुश लगाने या अमंगल से समाज को बचाने हेतू साहित्यकार मन, धमक को विकसित कर शैतानियत को ललकारता है और उसके प्रति रणभूमी में रणशिंग भी फुंक देता है । सामाजिक मंगल का लक्ष्य साध्य करने के लिए वह डटा खड़ा रहता है । रणभूमी में व्यंग्य ही उसका हथियार है । इसके भीतर अंग्रेजी की 'सटायर' विधी भी कार्यरत रहती है । जिसका स्वरूप है,की "मानवीय दुर्बलताओं पर कटाक्ष करके उन्हें उभारना और सुधारना । डॉ. बर्नाड शॉ का कथन है कि, मानवीय दुर्बलता और विकृति का विनाश ही व्यंग्य का लक्ष्य है । मुर्खों को प्रोत्साहन देने के बजाय हास्य एवं व्यंग्य द्वारा उन्हें ध्वस्त करके विकृति को विनोद भाव से न स्विकार करनेवालों पर संसार की मुक्ति निर्भर करती है।" भारतीय समस्त विद्वानों की व्यंग के संबंध में धारणा जान पडने पर निचोड सामने आता है कि, व्यंग्य इनके लिए अस्त्र है, एक विधि है, एक

अन्वेशन,और अनुभूति का आधार तथा सक्षम अभिव्यक्ती इनके काव्य का मिश्रणहै। जिसकी भाषा भी रूपक,उपमान,उपमेय वक्रोक्ति उदाहरण ,उत्प्रेक्षा , यमक,अनुप्रास,व्यक्तिरेक,प्रतीप,अन्योक्ति, समासोक्ति,अत्युक्ति,दृष्टांत,निदर्शना आदि अलंकारो से हुल्लड का कलापक्ष सजा है । अधिकतर दोहाछंद,मुक्तछंद,का प्रयोग किया हुआ प्रतीत होता है,तथा सममात्रिक अंत्यानुप्रास का भी प्रयोग किया है।चलती भाषा,के लोक जीवन से जुडे शब्द इनकी भाषा के पहिए हैं। दोहों में मध्यकालीन दोहों के प्रभाव की झलक मिलती है । भाषा के कारण भावपक्ष भी प्रबल एवं सक्षम बन पडा है। जो गहरा व्यंग्य विधान करने में पूर्ण है । निर्विवाद हुल्लड जी,एक जबरदस्त,मर्मस्पर्शी व्यंग्यकार हैं, जो हिंदी साहित्य संसार को व्यंग्य के साथ हास्य का भंडार दे चुके हैं..... यह योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण ही माना जाएगा ..... जो फिर से व्यंग्य का कारवां बनाएगा ।

संदर्भसुचि

हिंदी साहित्य का इतिहास..... (डा.गणपतीचंद्र गुप्त...समग्रनिष्कर्षन)

२० वी सदी की चर्चित व्यंग्य रचनाएँ (सुभाष चंदर,भावना प्रकाशन,दिल्ली पृ.१.२)

भारतीय काव्यशास्त्र..... भगिरथ मिश्र.... (विश्वविद्यालय प्रकाशन ध्वनि एंव वक्रोक्ति संप्रदाय...२०३,२१२)

व्यंगकार हरिशंकर परसाई ..... (डॉ भरत पटेल, चिमन प्रकाशन,समग्र निष्कर्ष)

कवि हुल्लड मुरादाबादी २१ वी सदी के व्यंग ..... (इंटरनेट से संदर्भ)

क्या करेगी चांदनी?..... (कवि हुल्लड मुरादाबादी)

जरूरत क्या थी?..... (कवि हुल्लड मुरादाबादी)

रहने को घर नहीं ..... (कवि हुल्लड मुरादाबादी.)

हुल्लड के दोहेभाग १..... (कवि हुल्लड मुरादाबादी)

हुल्लड के दोहे भाग २..... (कवि हुल्लड मुरादाबादी)

Scanned with OKEN Scanner